सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का दशवाँ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक वैशाख मास विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् पंडित अनन्त शर्मा द्वारा लिखित **'भगवान् धन्वन्तरि एवं दिवोदास धन्वन्तरि'** नामक लेख में भगवान् धन्वन्तरि के जन्म, उनके शिष्यों का उल्लेख है तथा उन्हें आयुर्वेद का मर्मज्ञ विद्वान् होने के साथ-साथ एक कर्मवीर सम्राट व महाराज दशरथ के सखा के रूप में वर्णित किया है। तत्पश्चात् प्रो. केशव शास्त्री धर्मसूनु द्वारा लिखित एवं जयप्रकाश शर्मा द्वारा प्रस्तुत **'विजयादशमी निर्णय:'** लेख में विजय दशमी पर्व को कौनसी तिथि और कौनसा समय लिया जाना चाहिए इस पर प्रकाश डाला है। इसी क्रम में गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' **'मीरा मतवारी'** लेख में मीरा के जीवनवृत्त के बारे बताते हुये मीरा की भगवान् के प्रति अनन्य भक्ति और प्रेम का उल्लेख किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा